प्रतिलेखन संख्या 21

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। इस देश के वर्तमान

भारी संकट के समय मे और विशेष रूप से उस समय जबकि हम लडाई से अभी निवृत्त हुए हैं और

आकाश में लडाई के बादल दूसरी तरफ से आने शुरू हुए हैं हमारे वित्त मेंत्री ने जो बजट पेश

किया है, वे इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

यद्पि भिन्न पहलुओं को लेकर आलोचनाएँ की गई हैं लेकिन यदि उनकी कठिनाइयों को भी देखा

होता कि राष्ट्र को किन-किन संकटों का सामना करना पड़ रहा है इस बात पर भी अगर मेरे से

पहले बोलने वाले वक्ताओं ने विचार किया होता तो मेरा विश्वास है कि उनकी आलोचनाओं का

आधार कुछ दूसरा होता। उन्होंने ऐसे कठिन अवसर पर यह एक संतुलित बजट पेश किया है उसके

लिए मैं उन्हें बार-बार बधाई देता हूँ लेकिन साथ ही साथ मैं अपना यह कर्तव्य समझता हूँ कि कुछ

ऐसे विचार भी उनके सामने प्रस्तुत करूँ जिससे उनकी कठिनाइयॉ कुछ हल हो जाएँ। उदाहरण

के रूप में विगत दो वर्षों में लेखा-जोखा कमेटी में बैठने के समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ है कि इस

देश में दो, तीन इस प्रकार की त्रुटियॉ मौजूद हैं जिनको दूर करने के लिए, जिनकी जॉच करने के

लिए यदि कोई एक कमेटी या आयोग बिठा दिया जाए तो राष्ट्र को, राष्ट्र की सरकार को, राष्ट्र के

विकास कार्यों को और राष्ट्र की रक्षा व्यवस्था के लिए करोड़ों नहीं अरबों की व्यवस्था फौरन हो सकती है। केवल शासन को जागरूक होकर कुछ कदम उठाने की आवश्यकता है।

अभी कुछ छिपे हुए धन का जिक्र किया गया। सरकार ने भी समय–समय पर ऐसा आभास दिया है कि इस देश में लगभग 30000 करोड़ रुपए का धन मौजूद है। स्वयं मैं समझ नहीं पाता हूँ कि जब सरकार ऐसा अनुभव करती है तो इसकी व्यवस्था करने में उसको दिक्कत क्या आ रही है। ऐसा मालूम होता है कि कहीं इच्छा शक्ति की कमी है। भारत की इस सरकार ने अपनी शक्ति का ठीक से उपयोग करके उस दुश्मन के दाँत खट्टे किए जिसके कि ऊपर विश्व की शक्तिशाली और इंगलैंड जैसी शक्तियों का अटूट सहारा था और जिसको कि उन्होंने हमारे विरुद्ध उकसा कर खड़ा किया था और अपना पूर्ण सहयोग दिया था।